उपसंहार

उपसंहार

साहित्य और समाज का परस्पर संबंध रहा है। साहित्य के कारण समाज सुसंस्कारी बनता है तथा समाज के कारण साहित्य का उद्‌भव होता है। समाज वह व्यवस्था है जिसके द्‌वारा व्यक्ति सामुदायिक रूढ़ि, परंपरा, सभ्यता का विकास करता है तथा मनोभावों को व्यक्त कर अन्य लोगों के कल्याण के लिए अनुभवों को हस्तांरित करती है। समाज और समूह में अंतर है। समाज विकसित एवं स्थायी व्यवस्था है। साहित्यकार इसका एक अंग होता है।

भारतीय समाज की नीव धर्म, कर्म, जाति-व्यवस्था रही है। यह समाज चार वर्ण, चार आश्रम, अनेक जातियाँ तथा संप्रदायों में विभाजित रहा है। धर्मग्रंथ, धर्म-स्थल, धार्मिक व्यक्ति, इसके आधार हैं परंतु आज जाति पर अर्थ का प्रभाव अधिक हो रहा है। अर्थ आज समाज की बुनियाद बन रहा है। समाज के विभाजन का यही आधार बन रहा है। समाज को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया है- उच्चवर्ग, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग। उच्चवर्ग पूँजीवादी, विलासी सभी सुखसुविधाओं को भोगनेवाला, उत्पादन साधनों पर अधिकार रखनेवाला मध्यवर्ग तथा निम्नवर्ग का शोषण करनेवाला दिखाई देता है। मध्यवर्ग महानगरों में बसनेवाला तथा आधुनिक जीवन की घुटन, अकेलापन, रीक्तता, मानसिक संघर्ष आदि समस्याओं से पीड़ित दिखाई देता है। निम्नवर्ग में समाज के निचले स्तर के लोग जिनकी आर्थिक स्थिति कमजोर है तथा अपनी सामान्य आकांक्षाओं की प्राप्ति के लिए अपने स्वाभिमान की तिलांजलि देनी पड़ती है।

भारत देश ग्रामों, महानगरों, बस्तियों का देश है। आज के नागरीकरण, औद्‌योगिकीकरण, शहरों का निर्माण हुआ। शिक्षा प्राप्ति, रोजगार की उपलब्धि आदि के कारण गाँव के लो लोग शहरों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। परिणामतः समाज व्यवस्था का रूप बदलने लगा। इसमें नए वर्ग मध्यवर्ग का निर्माण हुआ। नगरों की ओर आकर्षित परिवारों के कारण महानगरों में नई-नई समस्याएँ उत्पन्न हुई है। साहित्यकारों ने इसकी ओर संकेत किया। मध्यवर्ग वह वर्ग है जो शानो-शौकत को पाने की आकांक्षा रखता है लेकिन अपनी दुर्बल मानिकसता, आर्थिक विपन्नता, अहं की अधिकता, पाश्चात्य संस्कृति के प्रति आकर्षण, परंपरागत रीति-

रिवाजों की जकड़न के कारण महानगरीय जीवन की कुंठा, घुटन, अकेलापन में जीवन बिताने के लिए अभिशप्त है।

मध्यवर्ग पाश्चात्य संस्कृति की देन है। भारत में मध्यवर्ग का उद्‌भव अंग्रेजों के शासन काल में हुआ। सामाजिक क्रांति, औद्‌योगिकीकरण, आधुनिकीकरण, नागरीकरण के कारण तथा गतिशील महानगरीय जीवन से मध्यवर्ग की जीवनशैली में निरंतर परिवर्तन होते रहे हैं।

हिंदी उपन्यासों में श्रद्‌धाराम फुल्लोरी के 'भाग्यवती' तथा लाला श्रीनिवासदास का 'परीक्षा गुरु' में मध्यवर्गीय चित्रण परंपरा का आरंभ हुआ। प्रेमचंद तथा प्रेमचंदयुगीन रचनाकारों ने इस वर्ग का गहराई में जाकर उसका संवेदनात्मक दृष्टि से चित्रण किया। आज के उपन्यासों का केंद्रीय विषय बना है- मध्यवर्गीय जीवन। मध्यवर्गीय रचनाकारों ने स्वानुभवों से इस वर्ग की स्थिति एवं व्यथा को व्यक्त कर रहे हैं, यहाँ स्पष्ट है किसान, व्यापारी, नौकरी करनेवाले, अध्यापक, डॉक्टर आदि मध्यवर्ग में आते हैं। रोजी-रोटी पानेवाला यह समाज मध्यम वर्ग में अर्थाभाव, आपसी प्रेम की कमी महत्त्वपूर्ण समस्या लगती है। शिक्षा प्रसार, रोजगार की उपलब्धि आपसी प्रेम, भाईचारा को बढ़ावा देने से यह समस्या हल हो सकती है। आलोच्य उपन्यासकारों ने प्रभावी ढंग से मध्यम वर्ग का चित्रण करके उनकी सामाजिकता को दर्शाया है। साहित्यकार समाज जागृति का कार्य कर रहे हैं, उसमें वे सफल भी लगते हैं। मध्यवर्ग के चित्रण में बाह्‌य चित्रण अधिक है अर्थात् सभी साहित्यकार समाज से जुड़े हुए हैं। अब सामाजिक ढाँचा बदल रहा है, इसी कारण उसका भविष्य उज्ज्वल है।

साठोत्तरी कालखंड में हिंदी उपन्यासों का रूप विस्तृत एवं बहुमुखी हुआ। किसी एक विशिष्ट धर्म को केंद्र में रखकर उनका जीवन चित्रित किया जाने लगा। भारतीय समाज व्यवस्था वर्गगत रही। वर्ग स्तर के कारण समाज की एकजूटता टूट रही है। साहित्य में भी सामाजिक वर्ग संघर्ष का चित्रण हो रहा है, इसमें पढ़ा-लिखा, धनवान, उच्चवर्ग हो या अर्थाभाव, अज्ञान गरीबी में जीवनयापन करनेवाला निम्नवर्ग हो तथा दोनों के बीच में रहनेवाला मध्यवर्ग। आज के साहित्य में मध्यवर्ग और निम्नवर्ग का वास्तविक चित्रण होता है। शिक्षा प्रसार, नागरीकरण, पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव के कारण मध्यवर्ग और निम्नवर्ग की स्थिति में धीरे-धीरे

परिवर्तन हो रहा है। साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के द्वारा उसकी ओर प्रकाश डाला है। इसी वर्ग से जुड़े साहित्यकारों ने अपनी अनुभवों को शब्दबद्ध करने का प्रयास किया है।

मध्यवर्ग एक ऐसा वर्ग है जो न विकसित न पिछड़ा। नगर, महानगरों में विकास करके सफेद पोश जिंदगी जीनेवाला है। हर स्थिति में सोचनेवाला यह वर्ग अंत में संताप, ऊबन, दुःख से ग्रस्त होता है। विवाह, दांपत्य, संतान, स्वास्थ्य, अर्थ, भौतिक सुख आदि में अनेक समस्याओं के साथ संघर्ष करनेवाला मध्यवर्ग आधुनिक उपन्यास का केंद्र बना है। इसके कारण सिर्फ पति-पत्नी के संबंध टूटते नहीं बल्कि उसका अधिक बुरा असर बच्चों पर होता है। इन्हीं बालकों का मनोविज्ञान तथा मनस्थिति शोचनीय बनी है। इसकी ओर हिंदी के आलोच्य उपन्यासकारों ने संकेत किया है।

दांपत्य जीवन में टूटनशीलता आने से परिवार संस्था खतरे में पड़ी है, परिणामतः समाज स्वास्थ्य नहीं रहा है। इसका परिणाम विकास पर होता है, भौतिक विकास होगा, लेकिन आदमी का नैतिक विकास घटेगा। आलोच्य उपन्यासकारों में दांपत्य जीवन की टूटनशीलता का वास्तविक चित्रण किया है। आधुनिक मानव किताबें पढ़कर 'साक्षर' बना है परंतु सुसंस्कृत नहीं बना। कौन किसके लिए ? रिश्तों को महत्त्व न देनेवाली यह नई पीढ़ी भविष्य में अकेली बनेगी ? यही चेतावनी दी है।

राजेंद्र यादव द्वारा लिखित 'शह और मात' (1959) में उदय और सुजाता के द्वारा लेखकीय कर्तव्य तथा लेखकीय समस्याओं को रूपायित किया गया है। इस उपन्यास में मध्यवर्गीय व्यक्तियों की आर्थिक विफलता और मानसिक विवशता को स्पष्ट किया गया है।

मोहन राकेश ने 'अंधेरे बंद कमरे' (1961) उपन्यास में हरबंस और नीलिमा के माध्यम से टूटते दांपत्य जीवन और मध्यवर्गीय व्यक्तियों में बढ़ते अलगाव, घुटन, संत्रास, अजनबीपन, अकेलापन आदि को चित्रित किया है। इसमें महानगरों का सांस्कृतिक पतन तथा नगरों में रहनेवाले व्यक्तियों की अभिशप्त नियति को स्पष्ट किया है।

निर्मल वर्मा कृत 'वे दिन' (1964) उपन्यास में चेकोस्लावाकिया की राजधानी प्राग में 'मैं' (कथानायक) ने ऑस्ट्रियन पति परित्यक्ता युवती रायना के साथ बिताए तीन दिनों की कहानी है। इस उपन्यास में युरोप की महायुद्धोत्तर दिशाहीन पीढ़ी के संत्रास, घुटन, तनाव,

मूल्यहीनता और रीतापन आदि का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। इसमें मानवी जीवन का व्यर्थता-बोध, अतृप्त लालसाएँ, कुंठाएँ, अनैतिक आचरण, मानवी जीवन की अभिशप्त स्थिति एवं नियति को स्पष्ट किया है।

मन्नू भंडारी कृत उपन्यास 'आपका बंटी' (1971) में महानगरीय मध्यवर्गीय परिवार के तलाकशुदा दांपत्य जीवन के प्रभाव से निर्दोष बालकों के पीसते जीवन को 'बंटी' के द्वारा स्पष्ट किया है। यह एक बाल मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। इसमें आधुनिक पति-पत्नी शकुन और अजय के अहं के टकराव तथा तनाव से उत्पन्न स्थितियों के बीच 'बंटी' की दयनीय स्थिति का चित्रण किया है।

आलोच्य उपन्यासकारों ने महानगरों में रहनेवाले आधुनिक दांपत्य जीवन का वास्तविक चित्रण किया है। नगरों का जीवन भौतिक विकास से परिपूर्ण है, परंतु पारिवारिक समृद्धि की दृष्टि में अधूरा है। जब तक माता-पिता अपनी संतान की ओर, उसके भविष्य की ओर ध्यान नहीं देंगे तब तक दोनों में आपसी प्रेम नहीं रहेगा। एक-दूसरे के प्रति संघर्ष के कारण मध्यवर्ग दिशाहीन बन रहा है, जो समाज के लिए अहितकारी होगा। देश की हानी होगी। संपन्न, सुखी, प्रगत देश निर्माण के लिए सशक्त मध्यवर्ग का होना जरूरी है। इसकी ओर आलोच्य उपन्यासकारों ने संकेत किया। मध्यवर्ग की स्थिति-गति, दशा-दिशा को चित्रित करनेवाली ये रचनाएँ समाज जीवन का दर्पण है। मध्यवर्ग के कशमकश की कहानी है।

मध्यवर्गीय परिवार, जीवन पद्धति, जीवन संघर्ष और मध्यवर्गीय सदस्यों का विभाजन तृतीय अध्याय के अंतर्गत रूपायित किया है। विवेच्य उपन्यासों में मध्यवर्ग की शिक्षा, रहन-सहन, जीवन की समस्याएँ, आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्थिति आदि का चित्रण किया है। राजेंद्र यादव ने 'शह और मात' उपन्यास में मध्यवर्गीय लेखक, उच्च शिक्षा पानेवाले छात्र, अध्यापक, डॉक्टर, सरकारी कर्मचारी आदि सदस्यों का चित्रण मिलता है। इसमें मध्यवर्गीय महानगरों में रहनेवाले लेखक के व्यक्तिगत जीवन संघर्ष तथा ट्रेजडी को व्यक्त किया है।

मोहन राकेश ने 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में महानगरीय मध्यवर्गीय जीवन को रूपायित करते हुए पत्रकार, अध्यापक, कलाकार, चित्रकार, पोलिटिकल सेक्रेटरी, मॅनेजर, कार्यालयीन कर्मचारी, धनी लोग, उद्योगपति आदि मध्यवर्गीय सदस्यों का अंकन किया है। इस

उपन्यास में महानगरीय पत्रकारों की दुरावस्था, जीवन की अस्थिरता प्रमुखता से अंकित किया है। साथ ही महानगरीय मध्यवर्गीय परिवार की विघटन की प्रक्रिया को प्रस्तुत किया है।

निर्मल वर्मा ने 'वे दिन' में मध्यवर्गीय परिवार के उच्च शिक्षा पाने के लिए विदेश में गए छात्र के जीवन पद्धति एवं समस्याओं का चित्रण किया है। इस उपन्यास में चित्रित परिवेश अभारतीय होने के कारण विदेशी शहरी मध्यवर्ग के जीवन पद्धति, जीवन विषयक दृष्टिकोण, आर्थिक स्थिति, रहन-सहन, पारिवारिक दृष्टिकोण को चित्रित किया है। मन्नू भंडारी ने 'आपका बंटी' उपन्यास में अध्यापक, प्रिन्सिपल, डॉक्टर, मॅनेजर, वकील आदि मध्यवर्गीय सदस्यों की जीवन पद्धति को चित्रित किया है।

चारों उपन्यासों में महानगरीय मध्यवर्गीय जीवन का चित्रण है। महानगरों की गतिमान परिस्थितियों के कारण मध्यवर्गीय जीवन में हो रहे परिवर्तन को भी इन उपन्यासों में सूक्ष्मता से अंकित किया है। ये उपन्यास मध्यमवर्गीय जीवन की बहुविविधता को दर्शाते हैं। साथ-ही-साथ मध्यमवर्ग के बहुआयामी स्तरों पर प्रकाश डालते हैं। सभी स्तरों की मनोदशा, स्थिति, सामाजिक गति, नैतिक प्रवृत्ति, अहंभाव, संघर्ष आदि का चित्रण करते हुए मध्यवर्ग के भविष्य की ओर संकेत किया है।

इससे स्पष्ट होता है मध्यवर्ग जिस परिवेश में पल रहा है वह मजबूरी एवं समन्वयता का प्रतीक है। नैतिक मापदंडों ने उसे कसकर जकड़ा है, कमजोर मानसिकता उसे काट नहीं सकती, भाग्य भरोसेवादी प्रवृत्ति संघर्ष नहीं चाहती, ऐसे परिवेश में मध्यवर्ग जी रहा है। इसके यहाँ दर्शन होते हैं। विवेच्य उपन्यास वर्तमान मध्यवर्गीय परिवार का, पारिवारिक जीवन का दस्तावेज ही है।

आलोच्य उपन्यासों में मध्यवर्ग के सामाजिक जीवन एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण को स्पष्ट किया है। आज मध्यवर्गीय समाज में विवाह संस्था से विश्वास कम होता दिखाई देता है। यह वर्ग आज भी रूढ़ि-परंपराओं का बोझ अपने कंधों पर ढोने को मजबूर दिखाई देता है लेकिन शिक्षा एवं विज्ञान के विकास से रूढ़ि-परंपराओं की सख्त दीवारें कमजोर होती दिखाई देती हैं। मध्यवर्गीय समाज में संयुक्त परिवार टूट गए हैं और समाज में एकल परिवारों की संख्या बढ़ गई है। आज मध्यवर्गीय व्यक्ति व्यक्तिवादी दृष्टिकोण लेकर समाज की ओर देखता है। मध्यवर्गीय

नारियाँ शिक्षित बन गई हैं। वे अन्याय, अत्याचार एवं रूढ़ि-परंपराओं का विरोध कर रही हैं। आज नारियाँ स्वतंत्र व्यक्तित्व लेकर जीवन बीता रही हैं। वह खुद को आर्थिक और मानसिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बना रही हैं। मध्यवर्ग अपनी इज्जत एवं स्वाभिमान की रक्षा करता है। जाति-पाति के बंधन इस वर्ग में शीथिल होने लगे हैं। आज मध्यवर्ग उँची-उँची अकांक्षाएँ लेकर जी रहा है, लेकिन इन अकांक्षाओं की पूर्ति न होने पर घुटनभरी, निराशा से युक्त जिंगदी बिताने के लिए मजबूर होते दिखाई देते हैं।

मध्यवर्गीय सांस्कृतिक पक्ष का अध्ययन करने के पश्चात् स्पष्ट होता है कि मध्यवर्गीय समाज में 'स्व' को अधिक महत्त्व मिला है। मध्यवर्ग आज विवाह को एक समझौते के रूप में ले रहा है। आज मध्यवर्ग में प्रेमविवाह तथा अंतर्जातीय विवाह की संख्या बढ़ रही है। मध्यवर्गीय व्यक्ति पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण भोगवादी बनता जा रहा है। इस वर्ग के सांस्कृतिक दृष्टिकोण में आचार-विचार, रहन-सहन, पर्याप्त परिवर्तन दिखाई देता है। शिक्षा एवं विज्ञान के विकास और पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव के कारण सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति मध्यवर्ग की आस्था डगमगाने लगी है। मध्यवर्ग आज परंपराओं को नकारकर आधुनिक बन रहा है। यह वर्ग आज घर की अपेक्षा, पब, हॉटेल, रेस्तराँ में समय बिताना सुखदायी मानता है। मध्यवर्ग में आज नैतिक मूल्यों की अपेक्षा अर्थ प्रमुख बन गया है, फलस्वरूप अर्थ प्रधान संस्कृति का उदय हो गया है।

आलोच्य उपन्यासों का अध्ययन करने के पश्चात् यह स्पष्ट होता है कि ये उपन्यास अपने समकालीन परिवेश एवं समस्याओं से यथार्थ रूप से जुड़े हैं। इन उपन्यासों में मानवीय चेतना को आधुनिक समस्याओं के प्रति सजग करने का सफल प्रयास किया गया है। 'शह और मात', 'अंधेरे बंद कमरे', 'वे दिन' तथा 'आपका बंटी' उपन्यासों में आधुनिक जीवन की बहुआयामी समस्याओं का चित्रण किया है। महानगरीय जीवन तथा महानगरीय टूटते दांपत्य जीवन, अकेलापन, अर्थाभाव, बेरोजगारी, नशापान, मकान की समस्या आदि समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है।

आलोच्य उपन्यासों में सबसे अधिक प्रभावी समस्या है- परिवार विघटन और टूटते दांपत्य जीवन की। इस परिवार विघटन एवं टूटते दांपत्य जीवन का प्रमुख कारण है- स्त्री-पुरुष का

अहंभाव एवं सामंजस्य का अभाव है। महानगरों में जीवन यापन करनेवाले मध्यवर्गीय परिवारों में दांपत्य जीवन में असंतोष एवं दरार दिखाई देती है। चारों उपन्यासों में से मोहन राकेश के 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में टूटते दांपत्य जीवन का चित्रण अधिक सूक्ष्मता से किया गया है। उसके पीछे खुद मोहन राकेश जीवन की अस्थिरता एवं असफलता है। 'आपका बंटी' में भी टूटते दांपत्य जीवन के कारण, उसके परिणामों का विवेचन कर उपायों का भी संकेत किया है। आधुनिक युग की गतिमानता एवं अस्थिरता ने मानवी जीवन पर गहरा असर डाला है। अंतर्द्वंद्व के कारण आज मानव घुटन, संत्रास, अकेलापन, अलगावबोध की पीड़ा को लेकर जीने के लिए अभिशप्त है। चारों उपन्यासों के पात्र अंतर्द्वंद्व एवं अकेलेपन की पीड़ा सहते हैं।

विवेच्य उपन्यासों में प्रेम जीवन का चित्रण किया है। इन उपन्यासों में आधुनिक प्रेम पद्धति, उसका दिखावटीपन, असफलता आदि का वर्णन किया है। आज लोगों में प्रेम भाव का अभाव दिखाई देता है। प्रेम के अभाव के कारण परिवार, रिश्ते, दांपत्य टूट रहे हैं। प्रेम में व्यापारिकता एवं व्यवहारिकता बढ़ गई है। प्रेम के अभाव के कारण मानवता एवं सांस्कृतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। 'शह और मात' में प्रेम जीवन तथा आधुनिक युग में प्रेम पर विस्तार से विवेचन किया है। प्रेम समस्या के रूप में 'अंधेरे बंद कमरे' और 'आपका बंटी' में उभरा है। निर्मल वर्मा ने प्रेम को सिर्फ शारीरिक भोग के रूप में चित्रित किया है। सभी उपन्यासों में प्रेम समस्या का गहराई से चित्रण किया है।

नारी समाज में सदा प्रताड़ित एवं शोषित रही है। आज सभी क्षेत्रों में नारी ने विकास किया है। आधुनिक बनने की इच्छा ने नारियों के सामने अनेक समस्याएँ निर्माण हो गई हैं। आज नारी अपने व्यक्तिगत स्वातंत्र्य, 'स्व' और अस्तित्व के लिए कड़ा संघर्ष कर रही है। 'शह और मात' की सुजाता, अपर्णा, 'अंधेरे बंद कमरे' की नीलिमा, सुषमा, 'वे दिन' की रायना और 'आपका बंटी' की शकुन आधुनिक नारियाँ हैं, जो अपने शोषण का विरोध कर अपने स्वातंत्र्य के लिए लड़ती हैं। इस संघर्ष में वह कुछ हद तक सफल होती हैं लेकिन उनमें एक अस्थिरता, अकेलापन, घुटन, अलगाव-बोध अभिशाप की तरह छा जाता है। यह समस्या आज महानगरों में रहनेवाली सभी मध्यवर्गीय नारियों एवं युवतियों की बन गई है।

आधुनिक युग में भोगवादी संस्कृति के कारण समाज में नैतिकता, अनैतिकता को तिलांजलि दी गई है। समाज में आज अनैतिकता, अनाचार बढ़ने के कारण सच्चाई, रिश्ते, कर्म सब कुछ बेकार हो गए हैं। आधुनिक युग में स्त्री-पुरुष अपने यौन तृप्ति के लिए विवाह बाह्य संबंध रखते हैं। अपनी शारीरिक प्यास बुझाने के लिए वह न रिश्तों का खयाल करते हैं न आयु न ओहदे का। चारों उपन्यास में अनैतिक संबंध की समस्या एवं यौन लिप्सा की समस्या का विवेचन किया गया है तथा उसके परिणामों का भी चित्रण किया है। यौन भूख आदमी को दिशाहीन कर देती है।

आधुनिकीकरण, नागरीकरण, भूमंडलीकरण, औद्‍योगिकरण ने महानगरों का विकास किया, ग्रामीण जनता को आकर्षित किया लेकिन अकार्यक्षम, प्रशासन, अनियोजित उद्‍योगों का विकास तथा व्यवसायों की दिशाहीनता ने बेरोजगारी को बढ़ावा दिया है। विवेच्य उपन्यासों में महानगरों में रहनेवाले निम्नवर्ग एवं मध्यवर्ग को बेरोजगारी के कारण संघर्ष पूर्ण एवं आर्थिक दुरावस्था में जीवन यापन करना पड़ता है। बेरोजगारी के कारण युवक निराश होकर अनैतिक कार्यों के प्रति आकृष्ट होते जा रहे हैं। क्षमता और उच्च शिक्षा होकर भी छोटे तथा हीन कार्य करने के लिए मजबूर हो रहे हैं।

समाज में आज विवाह संस्था को नकारा जा रहा है। फलस्वरूप समाज में मानवी मूल्यों की टूटन एवं अनैतिक कार्य बढ़ रहे हैं। आज दांपत्य जीवन में विवाह को पवित्र बंधन न मानकर एक निरर्थक बंधन मान रहे हैं। सामंजस्य, प्रेम, अपनापन, विश्वास के अभाव के कारण दांपत्य टूटकर तलाक ले रहे हैं। आलोच्य उपन्यासों में वैवाहिक जीवन की अशांतता एवं निरर्थकता को शब्दबद्‍ध किया है। 'आपका बंटी' उपन्यास में तलाक की समस्या का चित्रण यथार्थ रूप में एवं उसके घातक परिणामों को रूपायित किया है।

आण्विक अस्त्र एवं युद्‍ध का खतरा आज पूरे विश्व के सिर पर मंडरा रहा है। युद्‍ध की भीषणता को निर्मल वर्मा ने 'वे दिन' उपन्यास में चित्रित किया है। इसमें स्पष्ट किया है कि युद्‍ध केवल मानवीय, आर्थिक, सामाजिक हानि ही नहीं करता तो आनेवाली पीढ़ी के लिए अभिशाप बन जाता है।

नशा आज हमारे देश के सामने गंभीर समस्या के रूप में खड़ी है। आज नशापान बंदी के लिए विविध कानून तैयार हो रहे हैं। नशा का सहारा केवल पुरुष ही नहीं तो आज महानगरों में रहनेवाले उच्चवर्ग तथा मध्यवर्ग की नारियाँ भी ले रही हैं। 'अंधेरे बंद कमरे' और 'वे दिन' में नशापान की समस्या को गहराई से उकेरा है। 'वे दिन' उपन्यास का वातावरण तो शराबघरों तथा नशा से भरा हुआ है।

आधुनिक जीवन में अनेक कारणों से दांपत्य जीवन खंडित हो रहा है। तलाक लेकर दांपत्य अलग हो जाते हैं। अपने अहं, सामंजस्य, प्रेम, विश्वास के कारण दांपत्य जीवन टूट जाता है। पति-पत्नी तलाक लेकर अलग तो हो जाते हैं लेकिन उनके बच्चे माँ-बाप होकर भी उपेक्षित जीवन जीते हैं। उन बालकों की मानसिकता को न कोई समझता है न उनकी समस्याओं को। माँ-बाप के इस उपेक्षित व्यवहार से इन बालकों में क्रोध, हट, अपमान, हीनता की भावना बढ़ जाती है। विक्षिप्त मानसिकता में वे अपना जीवन जीते हैं। इस समस्या का 'अंधेरे बंद कमरे' में अरुण द्वारा, 'वे दिन' में मीता द्वारा, 'आपका बंटी' में बंटी के द्वारा मार्मिकता से चित्रण किया है। उपेक्षित बालकों की समस्या का तथा बाल मनोविज्ञान का सटीक चित्रण मन्नू भंडारी के 'आपका बंटी' उपन्यास में मिलता है।

निष्कर्षतः आलोच्य उपन्यासों में आधुनिक मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं को यथार्थ रूप में और मार्मिकता से रूपायित किया है। सभी समस्याएँ वर्तमान युग में भी प्रासंगिक हैं। सभी समस्याएँ अपने युग और परिवेश से जुड़ी हैं, क्योंकि विवेच्य चारों रचनाकारों का जीवन संघर्षपूर्ण रहा है। अनुभूति, समाज का ज्ञान और युगबोध का भाव आदि के कारण से रचनाएँ प्रासंगिक, वास्तविक, चिंतनशील हैं जो मध्यवर्ग के जीवन का प्रतीक लगती है।

उपलब्धियाँ -

इन चारों उपन्यासों का अध्ययन करने के पश्चात् निम्न उपलब्धियाँ पायी जाती हैं-

1. आधुनिक मध्यवर्गीय समाज का विकास आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में हुआ है।
2. आधुनिक मध्यवर्गीय जीवन में परंपरागत व्यवस्था, पद्धति, रूढ़ियाँ टूट चुकी हैं।
3. मध्यवर्गीय समाज में आधुनिक जीवन मूल्यों में परिवर्तन परिलक्षित होते हैं।

4. मध्यवर्गीय दांपत्य जीवन में प्रेम, सामंजस्य, विश्वास तथा समर्पण की भावना होना आवश्यक है, इसकी ओर सभी उपन्यासकारों ने संकेत किया है।
5. राजेंद्र यादव, मोहन राकेश और मन्नू भंडारी ने भारतीय महानगरीय भीषणता एवं इसमें पीसता भारतीय मध्यवर्गीय समाज, उनकी समस्याओं को चित्रित कर इन समस्याओं के प्रति सचेत होने का संकेत किया है।
6. 'शह और मात', 'अंधेरे बंद कमरे', 'आपका बंटी' में स्वातंत्र्योत्तर मोहभंग हुए मध्यवर्गीय समाज जीवन की विडंबनाओं का तथा उनकी अवसरवादी प्रवृत्तियों का इतिहास जीवंत रूप में मिलता है।
7. विवेच्य उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन शैली, उनका समाज एवं संस्कृति के प्रति दृष्टिकोण एवं पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव को स्पष्ट रूप से रूपायित किया है।
8. आलोच्य उपन्यासों में समाज व्यवस्था एवं अखबारों के स्तर को सुधारने की आवश्यकता बताई है।
9. सभी रचनाकारों ने आधुनिक मध्यवर्गीय दांपत्य जीवन, पारिवारिक स्थिति एवं युवतियों की दिशाहीनता पर करारा व्यंग कसा है।
10. निर्मल वर्मा ने 'वे दिन' में विदेशी शहरी मध्यवर्गीय समाज का चित्रण किया है जो उच्चवर्गीय जीवन जीते हैं। साथ ही उनकी जीवन शैली एवं संस्कृति को हमारे सामने रखा है।
11. सभी रचनाकारों ने आधुनिकता के नाम पर पतनोन्मुख समाज का जो चित्रण किया है, वह समाज जगह-जगह दिखाई देता है। यह सभी रचनाकार पतनोन्मुख समाज का समर्थन नहीं करते बल्कि समय और समाज का सही चित्र खिंचते हैं।

अध्ययन की नई दिशाएँ -

इस शोध-प्रबंध का अध्ययन करने के उपरांत महत्त्वपूर्ण एवं नए विषय मेरे सामने आए हैं जिन पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है -

1. आधुनिक हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन की समस्याएँ।

2. आधुनिक हिंदी उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय नारी की दिशा एवं दशा।
3. मोहन राकेश के कथा-साहित्य में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन।
4. निर्मल वर्मा के कथा-साहित्य में चित्रित यौन भावना।
5. निर्मल वर्मा के साहित्य की शिल्प योजना।

मैंने अपनी विषयगत मर्यादा के कारण इन विषयों का विस्तृत विवेचन नहीं किया। अतः भविष्य में इन विषयों पर अनुसंधान हो सकता है।